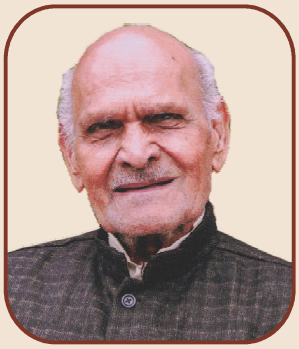

PROF. (DR.) RAJARAM JAIN

Prof. (Dr.) Rajaram Jain, a distinguished Indologist, epigraphist, exceptional writer, and a versatile scholar in Prakrit, Pali, Apabhramsha, Sanskrit, and Hindi literature, has passionately dedicated over 64 years to restoration, research, compilation and translation of ancient and medieval Indian manuscripts.

2. Born on 1st February, 1929, Prof. (Dr.) Jain earned his B.A. degree from Banaras Hindu University in 1951; followed by M.A. in Hindi literature and Shastracharya in 1954; M.A. in Prakrit language in 1958 and Ph.D. in 1967 from Bihar University. In 1961, he joined Magadh University, Bodhgaya, as a Lecturer in Sanskrit and Prakrit. His significant positions include Director at 'Kundkund Bharati', New Delhi (1991), President of 'Nagari Pracharini Sabha' (1983-2003), and Director of 'D. K. Jain Oriental Research Institute' (1979-2003), Ara, Bihar. He has also been associated with various institutes such as UGC, NCERT, prestigious 'President of India Awards' in Literature (1999-2000) and an Associate Member of the 'Centre of Jaina Studies', University of London (2020). He chaired the "All India Oriental Conference" in 1976.

3. Prof. (Dr.) Jain's 11,000+ published pages are a translation of rare Indian manuscripts into Hindi, preserving invaluable ancient knowledge spanning diverse aspects of ancient Indian life. His notable works include deciphering a rare Prakrit Manuscript of the 1st Century AD (Jony Pahuda) that reveals secrets to a healthy life through Mantra, Tantra, Ayurveda and longevity formulas; exploring India's trade relations with foreign countries in the 15th century (Sirival Chariu) honoured with an international Award in 2018; and shedding light on Delhi's origin in the 12th century (Pasanaha Chariu). His contributions extend to critically examining 22 rare Apabhramsha epics of the 14th Century AD (Raidhu Sahitya Aalochnatmak Parishilan) offering insights into Medieval Indian history and culture; and decoding the 12th century masterpiece on literature, art, culture (Vaddhamanachariu).

4. Prof.(Dr.) Jain's academic journey involves the discovery of unpublished manuscripts in remote Indian regions, which he diligently translated, revealing their literary, cultural, scientific, and historical significance. In his teaching career spanning over 35 years, he has inspired scholars and mentored numerous students. His dedication to Indology has sparked a resurgence of research, leaving an indelible mark, shaping Indology's future and nurturing a legacy.

5. Prof.(Dr.) Jain is recipient of numerous awards and honours. The Government of India conferred on him 'Jain Itihas Ratna' in 1974; 'President of India Certificate of Merit and lifelong fellowship' in 2000. He has been conferred a D.Litt. (Honoris Causa) by Shri Lai Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi, in 2005 for his pioneering contributions to Indology. The Institut de France, Paris conferred on him the prestigious 'Colette Caillat Foundation Award' in 2018. His contributions were further recognized through honours like the 'Festschrift' in 2019; 'Ahimsa International Award' in 1997; 'Acharya Kundkund Memorial Award' in 1999; 'Man of the Year', USA in 2004, 'Prakrit Jnanabharati International Award' in 2007. He holds the titles of 'Prakrit Sindhu', 'Prachya Vidya Vachaspati', 'Prachya Pandulipi Visheshgya', and 'Prakrit Purush'.

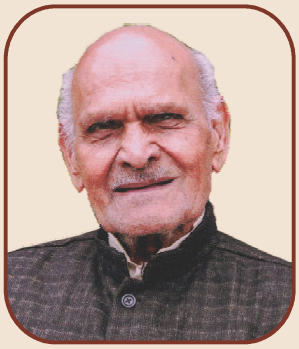

प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन

प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन, एक प्रतिष्ठित भारतविद, एपिग्राफिस्ट, असाधारण लेखक तथा प्राकृत, पाली, अपभ्रंश, संस्कृत और हिंदी साहित्य के प्रखर विद्वान हैं। वह 64 वर्षों से अधिक समय से प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय पांडुलिपियों के जीर्णोद्धार, अनुसंधान, संकलन और अनुवाद के कार्य में समर्पित भाव से लगे हुए हैं।

2. 1 फरवरी, 1929 को जन्मे, प्रो. (डॉ.) जैन ने वर्ष 1951 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की; इसके बाद इन्होंने वर्ष 1954 में हिंदी साहित्य और शास्त्राचार्य में स्नातकोत्तर; वर्ष 1958 में प्राकृत भाषा में स्नातकोत्तर और 1967 में बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी की। वर्ष 1961 में इन्होंने मगध विश्वविद्यालय, बोधगया में संस्कृत और प्राकृत के व्याख्याता के रूप में पदभार संभाला। इन्होंने 'कुन्दकुन्द भारती', नई दिल्ली (1991), 'नागरी प्रचारिणी सभा' (1983–2003) के अध्यक्ष और 'डीके जैन ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट', आरा, बिहार (1979–2003) के निदेशक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। वह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), एनसीईआरटी जैसे विभिन्न संस्थानों तथा साहित्य में प्रतिष्ठित 'भारत के राष्ट्रपति पुरस्कार' (1999–2000) से जुड़े रहे हैं। वह 'सेंटर ऑफ जैन स्टडीज', लंदन विश्वविद्यालय (2020) के भी एसोसिएट सदस्य रहे हैं। "उन्होंने वर्ष 1976 में "अखिल भारतीय ओरिएंटल सम्मेलन" की अध्यक्षता की।

3. प्रो. (डॉ.) जैन के 11,000 से ज्यादा पृष्ठों का प्रकाशन किया जा चुका है, यह सब दुर्लभ भारतीय पाण्डुलिपियों का हिंदी अनुवाद है, इनमें प्राचीन भारतीय जीवन–यापन के अलग–अलग पहलुओं से जुड़े अमूल्य प्राचीन ज्ञान को सहेजा गया है। इनकी उल्लेखनीय कृतियों में पहली सदी की दुर्लभ प्राकृत पांडुलिपि (जोणी पाहुड) का गूढ़ अध्ययन जिसमें मंत्र, तंत्र, आयुर्वेद और दीर्घायु सूत्रों के माध्यम से एक स्वस्थ जीवन के रहस्य का वर्णन है; 15 वीं शताब्दी (सिरिवाल चरिउ) में विदेशों के साथ भारत के व्यापार संबंधों की खोज, जिसके लिए इन्हें वर्ष 2018 में अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया; और 12 वीं शताब्दी (पासणाह चरिउ) में दिल्ली की उत्पत्ति पर प्रकाश डालना, शामिल है। इनके योगदान का दायरा 14 वीं शताब्दी के 22 दुर्लभ अपभ्रंश महाकाव्यों (रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन) की सूक्ष्म परख तक फैला हुआ है, जिसमें एक तरफ मध्यकालीन भारतीय इतिहास और संस्कृति को लेकर एक अंतर्दृष्टि डाली गई है; और दूसरी ओर साहित्य, कला, संस्कृति पर 12 वीं शताब्दी की अनमोल रचना (वड्ढमाणचरिउ) की व्याख्या की गई है।

4. प्रो. (डॉ.) जैन की अकादमिक यात्रा में भारत के सुदूर क्षेत्रों में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की खोज शामिल है, जिसका इन्होंने परिश्रम से अनुवाद करते हुए उनके साहित्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला। 35 वर्षों से अधिक के अपने अध्ययन कार्य के दौरान, वे विद्वानों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं और अनेक छात्रों का मार्गदर्शन किया है। भारतविद्या के प्रति उनके समर्पण ने अनुसंधान के पुनरुत्थान को जन्म दिया है, इसने एक अमिट छाप छोड़ी है, इससे भारतविद्या के भविष्य को आकार मिला है और यह विरासत फली–फूली है।

5. प्रो. (डॉ.) जैन के नाम कई पुरस्कार और सम्मान हैं। भारत सरकार ने उन्हें वर्ष 1974 में 'जैन इतिहास रत्न'; वर्ष 2000 में 'भारत के राष्ट्रपति का मेरिट प्रमाण–पत्र और आजीवन अध्येतावृत्ति' प्रदान की। भारतविद्या में उनके अग्रणी योगदान के लिए वर्ष 2005 में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा उनको डी लिट (मानद उपाधि) से सम्मानित किया गया है। इंस्टीट्यूट डी फ्रांस, पेरिस ने इन्हें वर्ष 2018 में प्रतिष्ठित 'कॉलेट कैलाट फाउंडेशन पुरस्कार' से सम्मानित किया। उनके योगदान को देखते हुए आगे वर्ष 2019 में 'फेस्टस्क्राइफ्ट'; वर्ष 1997 में 'अहिंसा इंटरनेशनल अवार्ड'; वर्ष 1999 में 'आचार्य कुन्दकुन्द मेमोरियल अवार्ड'; वर्ष 2004 में 'मैन ऑफ द ईयर', संयुक्त राज्य अमेरिका, वर्ष 2007 में 'प्राकृत ज्ञानभारती इंटरनेशनल अवार्ड' से सम्मानित किया गया। उनको 'प्राकृत सिंधु', 'प्राच्य विद्या वाचस्पति', 'प्राच्य पांडुलिपि विशेषज्ञ' और 'प्राकृत पुरुष' की उपाधियां मिली हुई हैं।